शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

भारत के प्रधानमंत्री के निर्माण में प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका : एक गवेषणात्मक अध्ययन

बीज शब्द :

ज्योतिष, ज्योतिर्विज्ञान, प्रारब्ध, भविष्यकथन, कर्मफल, राजनेता, प्रधानमंत्री, भाग्य, कालचक्र।

समाज में ज्योतिष का अध्ययन सर्वदा से बहुत से लोगों के लिए रुचि का विषय रहा है। ज्योतिष की परंपरा इसे कार्य-कारण नियमों की कसौटी पर कसकर एक विज्ञान समान विधा सिद्ध करती रही है। कार्यकाल के सिद्धान्त में विश्वास करने वाले राजयोग के पीछे प्रारब्ध की भूमिका को स्वीकारते हैं। काल की गति किसी मनुष्य के नियंत्रण में नहीं है किंतु कालचक्र में प्रारब्ध फलीभूत होकर व्यक्ति को यशस्वी बना देता है। उच्च पद की आकांक्षा का फलीभूत होना प्राय: नियति पर आश्रित दिखायी देता है। इसलिए राजनेतागण ज्योतिर्विज्ञान में अधिक रुचि दिखाई देते प्रतीत होते हैं। परंतु शोध आलेख उक्त के आलोक में प्रध ानमंत्रियों की कुंडली के आधार पर उनकी सफलता में प्रारब्ध और कालचक्र की भूमिका का गवेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

*****

डॉ० संजय कुमार सिंह
सचिव, उ0प्र0 उच्चतर
शिक्षा सेवा आयोग
इलाहाबाद

भारत के प्रधानमंत्री के निर्माण में प्रारब्ध एवं कालचक्र की भूमिका एक गवेषणात्मक अध्ययन

यह सच है कि हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, विधि-विधान, विधि हाथ। साथ ही यह भी सच है कि समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को न कुछ मिला है और न मिलेगा। यहां भाग्य का तात्पर्य प्रारब्ध से है और प्रारब्ध का संबंध पूर्व जन्म के संचित कर्म से है जो पुर्नजन्म के साथ स्थानान्तरित होता रहता है। उक्त कथन को जब हम अपने देश की गुलामी और आजादी के परिप्रेक्ष्य में विचार करते हैं तब हम सत्य के अत्याधिक करीब पहुंच जाते है। किसी देश अथवा राज्य का प्रारब्ध वहां के शासक वर्ग से, शासक वर्ग का प्रारब्ध अपने जनता से एवं उस शासक का प्रारब्ध किसी खास कुल अथवा वंश से भी अवश्य जुड़ा रहता है जिसे बिना गहन अनुसंधान के समझा नहीं जा सकता।

15 अगस्त, 1947 के बाद कांग्रेस ही एकमात्र सबसे बड़ी पार्टी और कई मायनों में अकेली पार्टी थी जिसे सत्ता में आना करीब-करीब तय माना जाता था। तब प्रधानमंत्री के पद को लेकर अटकलें लगाने की गुंजाइश ज्यादा नहीं होती थी। शुरू-शुरू में पटेल और नेहरू दो नेताओं के नाम चले थे और एक बार तो स्थिति अस्पष्ट हो गयी थी लेकिन जब पं0 नेहरू के नाम पर सहमति बन गयी तथा जब वे प्रधानमंत्री बन गए तो उनके जीवनकाल तक कभी किसी और के प्रधानमंत्री बनने की बात नहीं चली। हॉ, उनके अस्वस्थ होने पर और उनकी मृत्यु हो जाने की स्थिति में उनके उत्तराधिकारी को लेकर आंकलन किये जाते रहे।

15 अगस्त, 1947 से लेकर आज तक कुल 15 लोकसभा का निर्वाचन हो चुका है और अब तक कुल 14 राजनेता प्रधानमंत्री बन चुके हैं। आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी की राजनैतिक स्थिति को देखते हुए पं0 नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी के अतिरिक्त किसी और को इस उच्च पद पर आना तथा लंबे समय तक बने रहना तय नहीं लगता था। अत: कांग्रेस पार्टी के अतिरिक्त किसी अन्य राष्ट्रीय पार्टी के नेताओं पर दृष्टि डालना या उनकी जन्म कुंडली का भविष्य के सर्वोच्च नेता के रूप में विश्लेषण करने का प्रश्न न तो प्रेक्षकों के वश में था और न ही तत्समय के ज्योतिषियों का। इसीलिए श्री मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, श्री राजीव गांधी, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, श्री चन्द्रशेखर सिंह, श्री नरसिंह राव, श्री एच0डी0 देवगौड़ा, श्री आई0के0 गुजराल, श्री अटल बिहारी बाजपेयी, डॉ0 मनमोहन सिंह या श्री नरेन्द्र मोदी में से किसी के प्रधानमंत्री बनने से पूर्व सही मायने में किसी ज्योतिष का ध्यान ही नहीं गया और ऐसे भी जिस पद के लिए कई पार्टी के कई योग्य प्रत्याशी मौजूद हो तथा कुछ ऐसे भी प्रत्याशी हो जो पर्दे के पीछे हो और उन सभी की सही जन्मपत्री उपलब्ध न हो तो उस पर शत-प्रतिशत सही भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। अन्यथा की स्थिति में की गयी ज्योतिषीय भविष्यवाणियां गलत ही होगी। यह अलग बात है कि कुछ ज्योतिषियों ने उस समय के कतिपय नेताओं के भविष्य पर दृष्टिपात किया और उन्हें उनके सर्वोच्च पद पर पहुंचने की संभावनाएं दिखी और वे उनके बारे में उचित भविष्यवाणी कर सके जो कुछ हद तक सही भी घटित हुआ किन्तु यह महज एक संयोग था।

पं0 नेहरू के बाद शास्त्री जी के प्रधानमंत्री बनने का अनुमान करना कठिन था और स्व0 राजीव गांधी के जीते जी स्व0 विश्वनाथ प्रताप सिंह एवं स्व0 चन्द्रशेखर सिंह के बारे में तो कोई सोच भी नहीं सकता था। बाद में स्व0 नरसिंह राव जी की सरकार भी अप्रत्याशित ही थी। उसके बाद श्री देवगौड़ा और स्व0 इन्द्र कुमार गुजराल के प्रधानमंत्री बनने से पहले तो सोचा ही नहीं गया था कि इनको भी कभी इस पद के लिए चुना जा सकता है। बड़ी पार्टी, समर्थकों की बड़ी संख्या या करिश्माई व्यक्तित्व जैसा एक भी गुण इन लोगों में नजर नहीं आता था। तब इनके बारे में ज्योतिषीय आकलन का प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। बी0जे0पी0 के दो महत्त्वपूर्ण नेताओं श्री लाल कृष्ण आडवाणी और श्री अटल बिहारी बाजपेयी में से तत्समय पार्टी के फर्श से अर्श तक पहुंचाने वाले श्री आडवाणी जी के पक्ष में जनमत थी किन्तु श्री बाजपेयी जी प्रधानमंत्री बने। कांग्रेस पार्टी में श्रीमती सोनिया गांधी के अतिरिक्त तमाम करिश्माई व्यक्तित्व मौजूद थे किन्तु राजनीति से बिल्कुल दूर रहने वाला सीधे-साधे राज्यसभा सदस्य डॉ0 मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने। यद्यपि कांग्रेस पार्टी श्रीमती सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनाना चाहती थी किन्तु प्रारब्ध एवं कालचक्रके कारण डॉ0 सिंह प्रधानमंत्री के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। गठबंधन की सरकार में डॉ0 प्रणव मुखर्जी के अतिरिक्त दूसरी पार्टी के भी कई अन्य ऐसे अनुभवी राजनेता थे जो प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद पर आसीन हो सकते थे, किन्तु वे नहीं हो पाये। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी योग्यता एवं अनुभव के दृष्टि से प्रधानमंत्री पद के सर्वोच्च दावेदार थे किन्तु प्रारब्ध एवं कालचक्रने श्री आडवाणी के अतिरिक्त पार्टी के अन्य सभी वरिष्ठ नेताओं को किनारा करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री के पद पर आसीन किया। यह नियति का जीवन्त मिसाल है। श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बनने के बाद न केवल भारत के प्रधानमंत्री के रूप में वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मानित राजनेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं तथा वे भारतीय युवा वर्ग के आशा के श्रोत बन चुके हैं। तत्कालीन ज्योतिषी भी उक्त सर्वोच्च पद को धारण

करने वाले सही नेता के बारे में समय से पूर्व भविष्यवाणी नहीं कर पाये। राजनेताओं के बारे में सही भविष्यवाणी की भी नहीं जा सकती क्योंकि एक तो ज्यादातर राजनेता ग्रामीण पृष्ठभूमि से होने के कारण या तो उनकी जन्मपत्री बनी ही नहीं है या जो बनी भी है वह संभावनाओं पर आधारित है जिसकी सत्यता पर पूर्ण विश्वास नहीं किया जा सकता और दूसरी आज के बहुतेरे ज्योतिषियों के पास इतनी समय ही नहीं है कि वे कठोर परिश्रम कर उसकी सत्यता जांच कर सके। साथ ही चुनाव के उपरान्त सर्वोच्च पद पर पहुंचने वाले राजनेता चुनाव के पूर्व संभावित प्रत्याशी के रूप में अपने-अपने पार्टियों द्वारा घोषित भी नहीं होते, अत: उनके बारे में सही भविष्यवाणी की ही नहीं जा सकती।

एक बार किसी राजनेता के उच्च या सर्वोच्च पद पर पहुंचने या ख्याति प्राप्त राजनेताओं के उज्जवल भविष्य को देखकर हमारे ज्योतिषियों द्वारा संभावनाओं के आधार पर उनकी संभावित कुंडलियों का अध्ययन/आंकलन कर उन्हें ऊंचाई तक पहुंचने का ज्योतिषीय आधार ढूढ़ लिया जाता है जबकि मध्यम स्तर के और प्रान्तीय नेताओं की जन्मपत्री में अच्छी युति, ग्रहस्थिति, उपयुक्त महादशा-अन्तरदशा और उपयुक्त गोचर पर कोई भी ज्योतिषी ध्यान नहीं देता। देश के अग्रणी ज्योतिष वैज्ञानिक श्री के0एन0राव जी अपने मौलिक शोध के द्वारा इस दिशा में ठोस प्रयास कर रहे हैं और अपने शोध के द्वारा किसी परिणाम तक सही-सही पहुंचने के लिए कई मानक सिद्वान्त स्थापित करने का प्रयास किया है। जब 1978 में चौधरी चरण सिंह ने मोरारजी के मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था तब उन्होंने उनकी कुंडली का परीक्षण किया था और उन्हें प्रधानमंत्री बनने का संकेत दिया था। 1989 के चुनाव के पूर्व उन्होंने श्री वी0पी0 सिंह की जन्मपत्री का अध्ययन कर सर्वोच्च पद प्राप्त करने का संकेत दिया था साथ-ही नवम्बर, 1990 में उनकी सरकार गिर जाने की भी भविष्यवाणी की थी। वी0पी0 सिंह के बाद अगले प्रधानमंत्री के रूप में श्री चन्द्रशेखर सिंह की जन्मपत्री का अध्ययन कर अगस्त 1990 में ही संकेत दे दिया था कि उसी साल दिसम्बर तक वे प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हो सकते है। संभावित जातकों की सही जन्मपत्री, संबंधित पार्टी की जन्मपत्री, तत्कालीन राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों के ज्ञान के साथ-साथ न्यूनतम छ: माह पूर्व एवं छ: माह बाद के अनागत में झांकने की कोशिश से सही नतीजों तक पहुंचा जा सकता है।

अगस्त, 1990 में गुरूवर श्री के0एन0राव जी ने श्री चन्द्रशेखर सिंह से मिलकर पूरे विश्वास के साथ दिसम्बर तक उनके प्रधानमंत्री की भविष्यवाणी की थी क्योंकि तब तक उन्होंने अपने गंभीर शोध के द्वारा कतिपय सिद्वान्त स्थापित कर ज्योतिष के जिज्ञासुओं का उसपर और आगे शोध कार्य जारी रखने हेतु परामर्श दिया था। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में उल्लिखित मानक ज्योतिषीय सिद्वान्तों को दृष्टिगत रखते हुए अब तक हुए भारत के कुल 15 प्रधानमंत्रियों पं0 जवाहर लाल नेहरू, श्री गुलजारी लाल नन्दा, श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, श्री राजीव गांधी, श्री वी0पी0 सिंह, श्री चन्द्रशेखर सिंह, श्री पी0वी0 नरसिंह राव, श्री अटल बिहारी बाजपेयी, श्री एच0डी0देवगौड़ा, श्री इंद्र कुमार गुजराल, डॉ0 मनमोहन सिंह एवं श्री नरेन्द्र मोदी की जन्मपत्री, उसमें निर्मित योग/दुर्योग, दशा एवं गोचर आदि का अध्ययन कर अद्यतन शोध के परिप्रेक्ष्य में कतिपय विशिष्ट सिद्वान्त स्थिर किये जाने का प्रयास इस शोध आलेख में किया गया है जिसके द्वारा प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद, मंत्री पद या किसी विशिष्ट राजनैतिक सत्ता की प्राप्ति अथवा उन पदों से अपदस्थ होने या दुर्घटनाग्रस्त होने आदि की सही भविष्यवाणी समय से पूर्व की सके।

लघु पराशरी एवं वृहद् पराशर संहिता में बहुतेरे शुभ योगों का वर्णन मिलता है किन्तु महर्षि पराशर ने केन्द्र-त्रिकोण से बनने वाले योग की सर्वाधिक प्रशंसा की है। केन्द्र अर्थात् विष्णु और त्रिकोण अर्थात् लक्ष्मी से बनने वाले योग जीवनभर फलिभूत होते हैं। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर होता है कि इन योगकारक ग्रहों की दशा सही समय पर मिले। किसी भी जातक के जन्म के समय बेहतर योग, उचित समय पर उन योगकारक ग्रहों की दशा एवं गोचरीय सहयोग जैसी परिस्थितियां निर्मित होने में प्रारब्ध की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अच्छा योग होने के बावजूद यदि वांछित समय पर उन योगकारक ग्रहों का दशा नहीं मिलती है तो वे योग वास्तविक रूप में फलीभूत नहीं हो पाते और प्राय: निष्फल रह जाते हैं। इन योगों को व्यवहारिक रूप में फलिभूत कराने में शनि, बृहस्पति व मंगल की गोचरीय भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है। इसके अतिरिक्त उन ग्रहों की गोचरीय स्थिति भी महत्त्वपूर्ण होती है जिसकी दशा चल रही होती है। जन्म के समय वे कहाँ स्थित है और अपने स्थित स्थान से वर्तमान में वे कहा परिभ्रमण कर रहे हैं। यह भी महत्त्वपूर्ण होता है। उक्त सभी सिद्वान्तों को दृष्टिगत रखते हुए 1947 से लेकर आज तक के भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की जन्मपत्री पर अब हम शोधात्मक रूप में यह विचार करेंगे कि उन्हें प्रधानमंत्री बनाने में कौन से योग, किसकी दशा एवं गोचर में किसकी क्या भूमिका रही है तथा उनके पतन में किन ग्रहों द्वारा निर्मित दुर्योग, किसकी दशा एवं गोचरीय परिभ्रमण में कौन ग्रह, किस प्रकार की भूमिका निभायी? **उदाहरणार्थ-**

राजनैतिक सत्ता की प्राप्ति :

1- चतुर्थेश की दशा-अतंरदशा अथवा चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से जुड़े ग्रह द्धस्थित, युति अथवा दृष्टि द्वाराऋ की

दशा-अर्न्तदशा में विशिष्ट युति होने पर व्यक्ति को उच्च पद की प्राप्ति होती है तथा राजनेताओं को राज्याभिषेक तक की प्राप्ति होती है। यदि दशम भाव या दशमेश की भी स्थिति अच्छी हो और उसका चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से किसी तरह का संबंध भी बन रहा हो तो उक्त फलादेश की तस्वीर और साफ व भविष्यवाणी स्पष्ट हो जाती है।

2- पंचमेश और पंचमस्थ अथवा नवमेश और नवमस्थ की दशा में मंत्री पद मिल सकता है यदि आलोच्य भावों और इनके अधिपतियों की स्थिति अच्छी हो।

3- पंचमेश या पंचम भाव अथवा दशमेश या दशम भाव के साथ शनि और बृहस्पति का योग होने पर जातक राजनीति में उच्च स्थिति अर्जित करता है ऐसा शोध के दौरान पाया गया है।

अनुकूल दशा-अन्तरदशा का निरूपण

क्रम	नाम	अवधि	महादशा/अन्तरदशा
1.	पं0 जवाहर लाल नेहरू	15 अगस्त, 1947-26 मई, 1964	लग्नेश व लगनस्थ चंद्र की महादशा में चतुर्थेश व चतुर्थस्थ शुक्रकी अतंरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
2.	श्री गुलजारी लाल नंदा	27 मई, 1964- 9 जून, 1964	नवमेश जो ष्ठाष्ठस्थ है बृहस्पति की महादशा में चतुर्थेश जो नवमस्थ है, चंद्रमा की अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
	श्री गुलजारी लाल नंदा	11 जनवरी, 1966-22 जनवरी, 1966	नवमेश जो ष्ठाष्ठस्थ हैं वृहस्पति की महादशा में चतुर्थेशयुत जो नवमस्थ है, राहु की अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
3.	श्री लाल बहादुर शास्त्री	9 जून, 1964-11 जनवरी, 1966	चतुर्थेश दृष्ट बुध की महादशा में चतुर्थेश वृहस्पति की अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
4.	श्रीमती इंदिरा गांधी	22 जनवरी, 1966-24 मार्च, 1977	बृहस्पति की महादशा जो वक्री होकर चतुर्थ भाव व चतुर्थेश को देख रहा है एवं चतुर्थेश शुक्रका अंतरदशा में वह लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में प्रविष्ट हुई थी और सूर्य की अंतरदशा में प्रधानमंत्री बनी थी। मंगल-सूर्य में परिवर्तन योग बना हुआ है।
	श्रीमती इंदिरा गांधी	14 जनवरी, 1980-31 अक्टूबर, 1984	लग्नस्थ शनि की महादशा में चतुर्थेश शुक्रका अंतरदशा में प्रधानमंत्री बनी थी।
5.	श्री मोरारजी देसाई	24 मार्च, 1977-28 जुलाई, 1979	चतुर्थेश बुध की महादशा में चतुर्थेश बुध की ही अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
6.	श्री चौधरी चरण सिंह	28 जुलाई, 1979-14 जनवरी, 1980	दशमेश बुध की महादशा में द्वितीयेश व द्वितीयस्थ शनि की अन्तरदशा में जिसके साथ चतुर्थेश बृहस्पति बैठा है, प्रधानमंत्री बने थे।
7.	श्री राजीव गांधी	31 अक्टूबर, 1984-2 दिसम्बर, 1989	राहू की महादशा में और राहु की ही अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे। राहु द्वादश भाव में बैठकर चतुर्थ भाव को देख रहा है।
8.	श्री वी0पी0 सिंह	2 दिसम्बर, 1981-27 नवम्बर, 1990	बुध की महादशा में चतुर्थेश शुक्रकी अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
9.	श्री चंद्रशेखर सिंह	27 नवम्बर 1990-21 जून,1991	बुध की महादशा में वर्गोत्तम चतुर्थेश चंद्र की अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे।
10.	श्री पी0वी0 नरसिंह राव	21 जून, 1991-16 मई, 1996	दशमरथ सूर्य की महादशा में एवं दस्मस्थ मंगल की अन्तरदशा में प्रधानमंत्री बने थे। दोनों दशम भाव में स्थित होकर चतुर्थ भाव को देख रहे है।
11.	श्री एच0डी0 देवगौड़ा	1 जून, 1996-21 अप्रैल, 1997	चतुर्थेश शुक्रकी महादशा में अष्टमस्थ राहू की अंतरदशा में जो चतुर्थ भाव को देख रहा है प्रधानमंत्री बने थे।
12.	श्री इंद्र कुमार गुजराल	21 अप्रैल, 1997-19 मार्च, 1998	चतुर्थेश बृहस्पति की महादशा में और चतुर्थेश से दृष्ट सूर्य की अंतरदशा में प्रध ानमंत्री बने थे।
13.	श्री अटल बिहारी वाजपेयी	16 मई, 1996-1 जून, 1996	नवमस्थ राहू की महादशा में जो चतुर्थेश शनि से दृष्ट है सप्तमेश शुक्र की अंतरदशा में प्रधानमंत्री बने थे। अन्तरदशा का चतुर्थ से संबंध न होने के कारण वे सिर्फ 13 दिन ही प्रधानमंत्री रहे।
	श्री अटल बिहारी बाजपेयी	19मार्च, 1998-13 अक्टूबर,1999	नवमस्थ राहु की महादशा में जो चतुर्थेश शनि से दृष्ट है और दशमेश सूर्य की अंतरदशा में जो चतुर्थेश से दृष्ट है प्रध ानमंत्री बने थे।
	श्री अटल बिहारी बाजपेयी	13 अक्टूबर, 1999-21 मई, 2004	नवमस्थ राहु की महादशा में पंचमस्थ मंगल की अंतरदशा में जो चतुर्थेश शनि पर दृष्टि डाल रहा है प्रधानमंत्री बने थे।
14	श्री मनमोहन सिंह	22 मई, 2004-21 मई, 2009	राहु की महादशा में जो चतुर्थेश से दृष्ट है एवं बुध की अंतरदशा जो दशमेश होकर चतुर्थ भाव को देख रहा है प्रध ानमंत्री बने।
	श्री मनमोहन सिंह	22 मई, 2009- 25 मई, 2014	राहु की महादशा में जो चतुर्थेश से दृष्ट है एवं शुक्रकी अन्तरदशा में जो पंचमेश के साथ है दूसरी बार प्रधानमंत्री बने।
15	श्री नरेन्द्र मोदी	26 मई, 2014-	चन्द्र की महादशा में जो नवमेश होकर लग्न में लग्नेश के साथ स्थित है तथा वृह0 की अन्तरदशा में जो पंचमेश होकर चतुर्थ भाव में स्थित है तथा चतुर्थेत से दृष्टि भी है।

अनुकूल गोचर :

1- चतुर्थ भाव या चतुर्थेश, पंचम भाव या पंचमेश,

नवम भाव या नवमेश एवं दशम भाव या दशमेश के साथ शनि, बृहस्पति और मंगल का स्थानगत, युतिगत या दृष्टिगत सम्बन्ध बनने पर जातक के कैरियर में उत्थान की स्थिति बनती है। यदि योगकारक ग्रहों की दशा चल रही हो और आलोच्य भावों अथवा भावेशों पर उक्त तीनों ग्रहों का गोचर हो रहा हो तो अनुकूल परिणाम की संभावना कफी बढ़ जाती है किन्तु प्रतिकूल दशा के होने पर उक्त भावों अथवा भावेशों पर तीनों ग्रहों का गोचर होने पर भी अनुकूल परिणाम नहीं प्राप्त हो सकता।

2- यद्यपि जन्मपत्री के विश्लेषण में योग और योगकारक ग्रहों की दशा का खास महत्त्व होता है किन्तु गोचर की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता। किसी शिखर पर पहुंचने के लिए दोनों की उपस्थिति अपरिहार्य होती है। वह उपस्थिति चाहे स्थित रूप में हो या दृष्टि रूप में।

अनुकूल गोचर का निरूपण

क्रम	नाम	गोचरस्थ शनि	गोचरस्थ बृहस्पति	गोचरस्थ मंगल
1.	पं0 जवाहर लाल नेहरू	लग्न में स्थित होकर पंचमेश व दशम भाव को देख रहा था।	चतुर्थ भाव में स्थित होकर दशम भाव को देख रहा था	द्वादश में स्थित होकर पंचमेश, नवमेश व दशमेश को देख रहा था।
2.	श्री गुलजारी लाल नंदा	एकादश में स्थित होकर पंचम व दशमेश को देख रहा था।	लग्न में स्थित होकर पंचम-नवम व चतुर्थेश को देख रहा था।	लग्न में स्थित होकर चतुर्थ भाव व दशमेश को देख रहा था।
	श्री गुलजारी लाल नंदा	एकादश में स्थित होकर पंचम व दशमेश को देख रहा था।	द्वितीय में स्थित होकर पंचम-नवम, दशम व दशमेश को देख रहा था।	दशम भाव में स्थित होकर चतुर्थ व पंचम भाव को देख रहा था।
3.	श्री लाल बहादुर शास्त्री	तृतीय में स्थित होकर पंचम-नवम व चतुर्थेश-दशमेश को देख रहा था।	पंचम में चतुर्थेश के साथ स्थित होकर नवम व दशमेश को देख रहा था।	षष्ठ में स्थित होकर नवम्, नवमेश व दशमेश को देख रहा था।
4.	श्रीमती इंदिरा गांधी	अष्टम में स्थित होकर दशम-दशमेश एवं पंचम-पंचमेश को देख रहा था।	एकादश में नवमेश के साथ स्थित होकर पंचम को देख रहा था तथा वक्री होकर दशम व चतुर्थ से भी संबंध बना रहा था।	अष्टम में स्थित होकर पंचमेश, नवमेश व दशमेश को देख रहा था।
	श्रीमती इंदिरा गांधी	तृतीय में स्थित होकर पंचम-नवम को देख रहा था तथा वक्री होकर चतुर्थ भाव, पंचमेश, नवमेश व दशमेश से भी संबंध बना रहा था।	द्वितीय में पंचमेश-दशमेश के साथ स्थित होकर चतुर्थेश व दशम को देख रहा था तथा वक्री होकर पंचम-नवम को भी देख रहा था।	द्वितीय में पंचमेश-दशमेश के साथ स्थित होकर पंचम-नवम् को देख रहा था तथा वक्री होकर चतुर्थ से भी सम्बन्ध बना रहा था।
5.	श्री मोरारजी देसाई	द्वितीय में स्थित होकर चतुर्थ भाव चतुर्थेश-पंचमेश को देख रहा था तथा वक्री होकर दशम भाव को भी देख रहा था।	द्वादश में स्थित होकर चतुर्थ भाव व चतुर्थेश-पंचमेश को देख रहा था।	नवम् में स्थित होकर चतुर्थ को देख रहा था।
6.	श्री चौधरी चरण सिंह	नवम भाव में स्थित था।	अष्टम में स्थित होकर चतुर्थ भाव व चतुर्थेश को देख रहा था।	षष्ठ में स्थित होकर नवम्-नवमेश व दशमेश को देख रहा था।
7.	श्री राजीव गांधी	तृतीय में स्थित होकर पंचम व नवम को देख रहा था।	पंचम में स्थित होकर नवम भाव, पंचमेश व दशमेश को देख रहा था।	पंचम में स्थित था।
8.	श्री वी0पी0 सिंह	छठे में नवमेश के साथ स्थित था।	द्वादश में स्थित होकर चतुर्थ भाव व नवमेश को देख रहा था तथा वक्री होकर चतुर्थेश व पंचम से भी संबंध बना रहा था।	चतुर्थ में स्थित होकर चतुर्थेश व दशम को देख रहा था।
9.	श्री चंद्रशेखर सिंह	नवम में स्थित होकर नवमेश को देख रहा था।	चतुर्थ में स्थित होकर दशम व दशमेश को देख रहा था।	द्वितीय में स्थित होकर पंचम-नवम् व दशमेश को देख रहा था।
10.	श्री पी0वी0 नरसिंह राव	पंचम में स्थित होकर वक्रस्थिति में चतुर्थ दशम व दशमेश से संबंध बना रहा था।	एकादश में स्थित होकर पंचम को देख रहा था।	एकादश में स्थित होकर पंचम को देख रहा था।

11.	श्री एच0डी0 देवगौड़ा	नवम में स्थित होकर चतुर्थेश को देख रहा था।	छठे में स्थित होकर पंचमेश-नवमेश, दशम व दशमेश को देख रहा था तथा वक्री होकर पंचम-नवम व चतुर्थेश के साथ भी संबंध बना रहा था।	दशम में स्थित होकर चतुर्थ व पंचम को देख रहा था।
12.	श्री इंद्र कुमार गुजराल	चतुर्थ में स्थित होकर पंचमेश व दशम को देख रहा था।	द्वितीय भाव में स्थित होकर चतुर्थेश-पंचमेश एवं दशम को देख रहा था।	नवम् में स्थित होकर नवमेश-दशमेश व चतुर्थ भाव को देख रहा था तथा वक्री होकर चतुर्थेश से भी सम्बन्ध बना रहा था।
13.	श्री अटल बिहारी बाजपेयी	पंचम में स्थित होकर पंचमेश-दशमेश को देख रहा था।	पंचमेश-दशमेश के साथ द्वितीय में स्थित होकर दशम को देख रहा था तथा वक्री होकर पंचम-नवम व नवमेश से भी संबंध बना रहा था।	षष्ठ में स्थित होकर नवम्-नवमेश व चतुर्थेश को देख रहा था।
	श्री अटल बिहारी बाजपेयी	पंचम भाव में स्थित होकर पंचमेश-दशमेश को देख रहा था।	चतुर्थ में स्थित होकर दशम भाव व चतुर्थेश को देख रहा था।	पंचम भाव में स्थित होकर चतुर्थेश को देख रहा था।
	श्री अटल बिहारी बाजपेयी	ष्ठाष्ठ में स्थित होकर चतुर्थेश को देख रहा था तथा वक्री होकर पंचम-पंचमेश व दशमेश से भी संबंध बना रहा था।	ष्ठाष्ठ में स्थित होकर चतुर्थेश-पंचमेश व दशमेश को देख रहा था तथा वक्री होकर पंचम-नवम व नवमेश से भी संबंध बना रहा था।	द्वितीय भाव में पंचमेश-दशमेश के साथ स्थित होकर पंचम-नवम् को देख रहा था।
14	श्री मनमोहन सिंह	सप्तम में स्थित होकर नवम-चतुर्थ व चतुर्थेश को देख रहा था।	चतुर्थेश के साथ नवम में स्थित होकर पंचम को देख रहा था।	सप्तम में स्थित होकर नवमेश, दशम व दशमेश को देख रहा था।
	श्री मनमोहन सिंह	चतुर्थेश के साथ पंचम में स्थित था।	तृतीय में स्थित होकर चतुर्थेश व नवम को देख रहा था।	चतुर्थ में स्थित होकर नवमेश, दशम व दशमेश को देख रहा था।
15	श्री नरेन्द्र मोदी	वक्री अवस्था में द्वादश भाव में स्थित होकर पंचम भाव, नवमेश, लग्न-लग्नेश एवं दशमेश को प्रभावित कर रहा था।	अष्टम भाव में स्थित होकर चतुर्थ भाव व पंचमेश को प्रभावित कर रहा था।	एकादश: भाव में स्थित होकर दशमेश व पंचम भाव को प्रभावित कर रहा था।

पदच्युत होने या मृत्यु :

1- सूर्य ग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण किसी भी शासक के कार्यकाल पर अच्छा या बुरा दोनों प्रभाव डालते हैं। ज्योतिष में ग्रहण का संबंध राहु-केतु से होता है। वैसे वैज्ञानिकों का मत है कि ग्रहण का मानव जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि शताब्दियों से घट रहे घटनाक्रम के साथ-साथ नेताओं और राष्ट्राध्यक्षों पर पड़ रहे प्रभाव इसके प्रत्यक्ष गवाह है।

2- जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, दशम भाव या दशमेश पर जब गोचर के द्वारा राहु-केतु का अक्ष बन रहा हो और यदि एक-दो वर्षों के भीतर जातक को प्रतिकूल दशा भी प्राप्त हो रही हो तो उस राजनेता को अपदस्थ होने या उसकी मृत्यु या दुर्घटना होने की प्रबल संभावना बनी रहती है।

3- छठें, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी या उनमें बैठे ग्रह मुंडेन तालिका में साथ हो तो पदच्युत होने अथवा दुर्घटना होने का स्पष्ट संकेत मिलता है।

4- दूसरा संकेत गोचर में शनि की स्थिति से भी मिलता है।

5- किसी भी शासक के पतन के समय वृहस्पति का गोचर लग्न से और चन्द्रमा से केन्द्र में अवश्य होता है।

6- दशमेश की गोचरीय स्थिति से भी सिंहासन से उतरने की सही तस्वीर स्पष्ट होती है।

7- लग्न-लग्नेश-दशम-दशमेश एवं चन्द्र-दशम-दशमेश के ऊपर राहु-केतु के द्वारा ग्रहण लगने अथवा एक वर्ष के अन्दर ग्रहण लगने की संभावना होने पर जातक के वर्तमान स्थिति में अवश्य परिवर्तन लाता है। यदि जातक का कैरियर पूर्व से उत्तम स्थिति में हो तो पतन की स्थिति बनता है और पतन की स्थिति में होने पर उत्तम स्थिति बनता है।

7- सिंह-धनु राशि में राहु-केतु, बृहस्पति एवं शनि का गोचर आने पर भी ग्रहण की भांति परिवर्तन जनित परिस्थितियाँ पैदा होती है।

ग्रहण और पतन

क्रम	नाम	लग्न-लग्नेश-दशम-दशमेश	चंद्र-दशम-दशमेश
1.	पं0 जवाहर लाल नेहरू	1962 के अष्टग्रही मकर में हुई।	चन्द्र के ऊपर से राहु गोचर कर रहा था।
2.	श्री गुलजारी लाल नंदा		
	श्री गुलजारी लाल नंदा	1965 में लग्न से सप्तम में राहु था।	चंद्र से दशम बाद में नवम में राहु था।
3.	श्री लाल बहादुर शास्त्री	लग्न से सप्तम में होकर राहु अष्टम में गया था।	चन्द्र के ऊपर से होकर राहु द्वादश में गया था।
4.	श्रीमती इंदिरा गांधी	1977 में लग्न से चतुर्थ-दशम में राहु-केतु थे।	चंद्र से दशम में राहु था।
	श्रीमती इंदिरा गांधी	लग्न से चतुर्थ होकर राहु तृतीय में चल रहा था।	चन्द्र से दशम् होकर एकादश में चल रहा था।
5.	श्री मोरारजी देसाई	साढ़ेसाती चल रही थी।	चंद्र के ऊपर राहु था जब मोरारजी ने इन्हें निष्कासित किया।
6.	श्री चौधरी चरण सिंह	1980 जून में राहु कक्रमें था। पुत्र संजय गांधी की मृत्यु	राहु सप्तम में।
7.	श्री राजीव गांधी	लग्न से सप्तम में राहु 1988 में बोफोर्स कांड में फसे। एक साल बाद पतन।	चंद्र से सप्तम में राहु।
8.	श्री वी0पी0 सिंह	लग्न से सप्तम में राहु था	चंद्र से दशम में भी राहु था
9.	श्री चंद्रशेखर सिंह	लग्न से दशम में राहू ने पतन की भूमिका तैयार की।	चंद्र से चतुर्थ में राहु ने भी यही किया।
10.	श्री पी0वी0 नरसिंह राव	लग्न में राहु था।	चंद्र केतु ग्रस्त सप्तम में राहु था।
11.	श्री अटल बिहारी वाजपेयी	लग्न से दशम में राहु जाने वाला था।	चन्द्र से दशम में भी राहु जाने वाला था।
	श्री अटल बिहारी बाजपेयी	लग्न से दशम में राहु था।	चन्द्र से दशम में भी राहु था।
12.	श्री एच0डी0 देवगौड़ा	लग्न से द्वितीय होकर तृतीय में चल रहा था।	लग्नेश व चन्द्र से सप्तम होकर अष्टम चल रहा था।
13.	श्री इंद्र कुमार गुजराल	लग्न से दशम से होकर नवम् में चल रहा था।	चन्द्र से पंचम चल रहा था और लग्नेश व चतुर्थ में जाने वाला था।
14	श्री मनमोहन सिंह	जुलाई 2004 में लग्न से चतुर्थ व दशम में था	चन्द्र से चतुर्थ व दशम् में था।
	श्री मनमोहन सिंह	लग्न से दशम जाने वाला था।	चन्द्र से चतुर्थ-दशम में राहु-केतु का ग्रहण विद्यमान था।

जहां तक राहु और केतु द्वारा बनने वाले कालसर्प योग का प्रश्न है? कालसर्प को लेकर समाज में बहुत भ्रान्तियां फैली हुई है। प्राचीन भारतीय ज्योतिषीय ग्रन्थों में राहु-केतु को छाया-ग्रह के रूप में वर्णित किया गया है और उसमें यह उल्लेख मिलता है कि इन ग्रहों का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता तथा ये जिस भाव में रहते हैं उस भावेश का स्वभाव ग्रहण कर लेते है या जिस ग्रह के साथ रहते है उसका प्रभाव व स्वभाव ग्रहण कर लेते है। साथ ही जिस भाव या ग्रह के साथ ये रहते है, उसके प्रभाव को भी बढ़ा देता है। अत: ऐसी स्थिति में ये दोनों छाया ग्रह अच्छे-बुरे की श्रेणी में नहीं आ सकते। स्थान सापेक्ष या ग्रह सापेक्ष इनका प्रभाव व परिणाम प्रकट होता है। इसलिए राहु-केतु के मध्य में सभी ग्रहों के स्थित होने मात्र से परिणाम बाधित या बुरा नहीं होता बल्कि वह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रश्नगत दुर्योग किस भाव में और किस ग्रह के साथ बन रहा है। यदि द्वितीय-अष्टम भाव में क्रूर या पाप ग्रहों के साथ आलोच्य दुर्योग बनता है तो अवश्य तकलीफदेह होता है। हां, यह सच है कि आलोच्य दुर्योग जिस भाव में बनता है वे उस भाव से संबंधित एक-दो किसी विशेष गुणधर्म को अवश्य नष्ट करते हैं जिसको लेकर व्यक्ति के मन में आजीवन या समय-समय पर प्रश्नगत विषय को लेकर रिक्तता का भाव अंत:चेतना में अनुभूत होता रहता है। भावगत तीव्रता के कारण कई बार वह व्यवहार में भी दिखलायी पड़ने लगता है। आलोच्य विषय को पं0 नेहरू की जन्मपत्री से समझा जा सकता है उदाहरणार्थ-

पंडित जवाहर लाल नेहरू का कालसर्प बृहस्पति के साथ छठे-द्वादश भाव में निर्मित है। वे सदैव शत्रुओं से भी प्रशंसा प्राप्त करते रहें किन्तु जहां पर वे अत्याधिक विश्वास किये वही उन्हें धोखा मिला। चाहे वह प्रकरण स्वयं की बेटी का रहा हो या चीन का रहा हो। इस प्रकार स्पष्ट है कि राहु-केतु स्वयं में कोई ग्रह नहीं है किन्तु ज्योतिष में इन्हें महत्त्व प्राप्त है और इसका प्रभाव व्यवहारत: दिखलायी पड़ता है। राहु-केतु द्वारा निर्मित योग जो कालसर्प के रूप में भी था निम्न उदाहरणों से समझा जा सकता है-

1- पं0 जवाहर लाल नेहरू की कक्रलग्न की कुंडली में राहु द्वादश भाव में मिथुन राशि में एवं केतु छठें भाव में धनु राशि में है। सारे ग्रह राहु-केतु के मध्य द्वादश भाव से

लेकर छठे भाव के बीच है। वे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

2- मार्गरेट थैचर की तुला लग्न की कुंडली है और चतुर्थ भाव में मकर राशि में केतु और दशम भाव में कक्रराशि के मध्य में सारे ग्रह हैं। पांचवें और नौवें में भाव में कोई ग्रह नहीं है। वह इंग्लैण्ड की प्रधानमंत्री बनी।

3- जार्ज डब्ल्यू. बुश की कक्रराशि की कुंडली में केतु पंचम भाव में वृश्चिक राशि में है और राहु एकादश भाव में है। सारे ग्रह राहु-केतु के मध्य द्वादश भाव लेकर तृतीय भाव के बीच है। वे अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

4- धीरू भाई अंबानी की धनु लग्न की कुंडली में राहु तृतीय एवं केतु नवम भाव में है। उन्हीं के मध्य सारे ग्रह स्थित हैं। उनकी गणना विश्व के अग्रणी उद्योगपतियों में की जाती है जो अपने व्यपारिक साम्राज्य को अपने पौरूष के बल पर फर्श से उठाकर अर्श तक पहुंचाया।

जहां तक मेदिनी ज्योतिष में शनि के राशि परिवर्तन का प्रश्न है? मेदिनी ज्योतिष में शनि के राशि परिवर्तित करने का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं व्यापक दिखलायी पड़ता है। शनि का किसी नक्षत्र विशेष में प्रवेश मेदिनी ज्योतिष का मुख्य आधार होता है; जैसे कन्या राशि में हस्त नक्षत्र पर शनि का प्रवेश किसी विख्यात अभिनेता पर मुसीबत आने की भविष्यवाणी की गयी थी जो सही हुई थी और तत्समय अमिताभ बच्चन दुर्घटनाग्रस्त हुए थे। विशाखा नक्षत्र में शनि का प्रवेश होने पर किसी राजनेता के साथ दु:खद होने की भविष्यवाणी भी की गयी थी और जून 1984 में श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गयी। इस तरह की दु:खद घटनाएं तत्समय उन्हीं लोगों के साथ घटित होती है जिनकी कुंडली में शनि का गोचर नकारात्मक भावों में होने के साथ ही साथ जन्म के समय स्थित शनि से षडाष्टक या द्वि-द्वादश योग बना रहा हो साथ ही दशा भी प्रतिकूल हो। अर्थात्शनि के राशि परिवर्तन पर लोगों के जीवन में कोई बड़ी उल्लेखनीय घटनाएं अवश्य घटती है। जिस भाव या भावेश के ऊपर से शनि का गोचर होता है उस भाव से संबंधित घटनाएं घटती है, लेकिन वह अच्छी होगी या बुरी यह दशा-अन्तर्दशा पर ही निर्भर करता है। साथ ही जन्म के समय स्थापित शनि की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है। प्राय: साढ़े साती का भय दिखाकर पेशेवर ज्योतिषियों द्वारा जनमानस को महज भ्रमित करने का कार्य किया जाता है जबकि शनि की साढ़े साती में शनि के द्वारा प्रारब्ध एवं वर्तमान कर्म के अनुसार जातक के साथ न्याय किया जाता है।

पं० जवाहर लाल नेहरू : दूसरी साढ़े साती में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

स्व० मोरारजी देसाई : पहली साढ़े साती में आजादी के पूर्व के सरकार में सम्मिलित हुए।

: दूसरी साढ़े साती में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने।

: तीसरी साढ़े साती में प्रधानमंत्री बने।

स्व० चौधरी चरण सिंह : शनि की साढ़े साती में प्रधानमंत्री बने।

श्रीमती सोनिया गांधी : मिथुन राशि। जब शनि मिथुन राशि में प्रवेश किया तो वे यूपीए की अध्यक्षा बनी और विश्व की लौह महिलाओं में उनका नाम दर्ज हुआ।

श्री के०एन० राव जी : पहली साढ़े साती में आई.ए.ए.एस. में चयन हुआ

: दूसरी साढ़े साती में ज्योतिष के क्षेत्र में विख्यात हुए।

श्री नटवर सिंह : वर्ष 1984 में दशम भाव में शनि के प्रवेश करते ही वे चुनाव लड़े, जीते और मंत्री बने।

श्रीमती इंदिरा गांधी : पहली साढ़े साती में मां की मृत्यु, स्वयं तपेदिक से पीड़ित।

: दूसरी साढ़े साती में, 1960 में पति का देहान्त, 1964 में पिता की मृत्यु। उस समय दशा भी प्रतिकूल थी। दशा सुधरते ही वे शास्त्री जी के मंत्रिमंडल में शामिल हुई और साढ़े साती समाप्त होने के पूर्व ही प्रधानमंत्री बन गई।

श्री नरेन्द्र मोदी : शनि की साढ़े साती में प्रधानमंत्री बने

1- वास्तव में कोई ग्रह अच्छा या बुरा नहीं होता। ग्रहों का असर वही होता है जैसे मनुष्य के कर्म होते हैं।

2- शनि के असर से व्यक्ति एक से नाता तोड़कर दूसरे से जोड़ सकता है। शनि वैराग्य का कारक होता है अत: संसार के मोह का विनाश कर आध्यात्मिक जीवन से जोड़ सकता है।

3- प्रजातंत्र का प्रधान ग्रह शनि है। वह जनता का प्रतिनिधित्व करता है। शनि या किसी अन्य ग्रह का प्रभाव किस रूप में फलीभूत होगा यह योग, दशा-अन्तर्दशा और गोचर देखकर ही बताया जाना चाहिए।

यह सच है कि जब ईश्वर भी मानव रूप में इस धरती पर अवतरित होते हैं तो उन्हें भी सभी नौ ग्रहों के दंड विधान एवं उनकी न्याय व्यवस्था को स्वीकार करना पड़ता है।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि केन्द्र-त्रिकोण एवं एकादश से बनने वाले योग, उन योगकारक ग्रहों की दशा एवं शनि-बृहस्पति, राहु-केतु व मंगल की अनुकूल गोचरीय स्थिति के कारण महज राजनैतिक व्यक्तियों को ही उच्च पद की प्राप्ति होती है या समाज के अन्य विभिन्न व्यवसायों से जुड़े हुए व्यक्तियों को भी? किसी भी जातक के जीवन में ग्रहों की महादशा या अन्तरदशा परिवर्तित होने पर और नयी दशा के आने के पूर्व से ही आगत के अनुरूप न केवल व्यक्ति की मनोवृत्तियां बनने लगती है

बल्कि अन्य परिस्थितियां भी उसी के अनुरूप शनैः-शनैः निर्मित होने लगती है। ग्रह एवं ग्रहों से निर्मित योग प्रत्येक व्यक्ति के कार्यक्षेत्र का निर्धारण करते हैं तथा वे उस कार्य को करने के लिए न केवल परिस्थितियां तैयार करते हैं बल्कि उस व्यक्ति के अन्दर उस कार्य के लिए मनोवृत्तियां भी तैयार करते हैं। अर्थात दशा परिवर्तन के साथ ही दशा के अनुरूप व्यक्ति की मनोवृत्तियां भी परिवर्तित होने लगती है। जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में कर्मशील रहते हैं वे अपनी जन्मपत्री में निर्मित योग, दशा एवं गोचर के अनुरूप अपने-अपने कर्म क्षेत्र में राजनैतिक व्यक्तियों की भांति सफलता-असफलता प्राप्त करते है। इसी प्रकार जो प्रशासनिक व्यक्ति होते हैं वे उक्त राजनैतिक व्यक्तियों की भांति आलोच्य ज्योतिषीय योग बनने पर योगकारक ग्रहों की दशा व गोचर प्राप्त होने पर अपने समकक्षियों से बेहतर वांछित उच्च पद-प्रतिष्ठा, समृद्वि आदि प्राप्त करते है अन्यथा की स्थिति में उनका भी प्रशासनिक जीवन अति सामान्य गुजरता है और उच्च प्रशासनिक पद पर रहने के बावजूद वांछित उच्च पद पाने से वंचित रह जाते हैं और वे पूरे कैरियर में सेवा संबंधी विभिन्न विषयों को लेकर निरंतर संघर्ष करते रहते हैं। प्रसंगवश यहां यह भी उल्लेख किया जाना उचित होगा कि राजनैतिक व्यक्तियों की भविष्यवाणी करने के पूर्व सर्वप्रथम प्रदेश स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक के सभी नेताओं की सही जन्मपत्री संग्रह कर और उसमें विद्यमान विभिन्न योग एवं दशा का विश्लेषण करने के साथ ही साथ तीव्र गति से बदल रही राजनैतिक प्रवृतियां, नेताओं के चरित्र, सम्प्रदायवाद, जातिवाद एवं वर्गवाद तथा भ्रष्टाचार के दलदल में धसती इस दुनिया पर निरंतर शोध कर अद्यतन परिप्रेक्ष्य में नये सिद्वान्त प्रतिपादित किए जाए। इससे न केवल ज्योतिष विज्ञान समृद्व होगा और मानवता का भला होगा बल्कि आगे आने वाली त्याज्य प्रवृत्तियों से भी जनसामान्य को सचेत किया जा सकेगा। आज आवश्यकता इस बात की भी है कि ज्योतिष के क्षेत्र में निरन्तर शोध हो और शोधात्मक ज्ञान को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जोड़कर जीवन को बेहतर बनाया जाय। वर्तमान गलाघोट प्रतिस्पर्धा एवं अधिकाधिक धन कमाने की आकांक्षा तथा शीघ्र सफल होने की कामना और येन-केन तीव्रता से अग्रिम पंक्ति तक पहुंच जाने की चाहत जीवन के शास्वत मूल्य (मानवीय संवेदना, भावना आदि) से आदमी को विलग कर रखा है। नैतिक मूल्य दिनोदिन क्रमशः सूखते चले जा रहे हैं। प्राचीन समय में जो शोधात्मक ज्ञान जीवन के लिए उपयोगी होता था उसका धार्मिक रूपान्तरण कर व उसे आस्था से जोड़कर उसे दैनिक जीवन का हिस्सा बना दिया जाता था ताकि आदमी को उसका अधिकाधिक लाभ प्राप्त हो सके और इसी सोच के कारण वह ज्ञान सदियों तक लोगों के रगों में प्रवाहित होता रहा। इसके अन्तर्गत ज्योतिषीय शोधात्मक ज्ञान भी सम्मिलित था।

पं० जवाहर लाल नेहरू

जन्म:14.11.1889, 23.05, इलाहाबाद, उ0प्र0; आश्लेषा-प चरण (बुध), वर्ण-ब्राह्मण, नाड़ी-अन्त्य, मृत्यु:27.05.1964

कारक: आत्म-च., अमात्य-बु., भातृ-बृ., मातृ-श., पुत्र-मं., ज्ञातृ-शु., दारा-सू., कारकांश-धनु।

जन्म चक्र

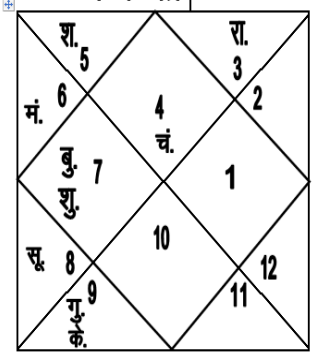

नवांष चक्र

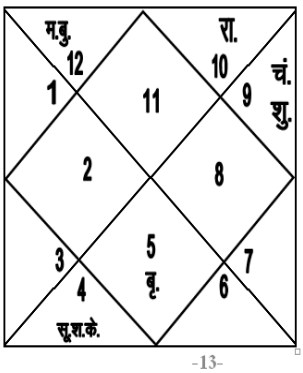

-13-

दशा	गोचर	उपलब्धि/घटनाएं
: चं.शु.बु. संकटा-संकटा तुला-मकर : रा.बु.चं.	: वृष-रा., मिथुन-मं. कर्क-सू. श. शु.बु.चं., तुला-बृ. वृश्ि.-के. : मेष-बु.बृ.मं.(बृष-सू.(मिथुन-रा.शु.(बृश्ि.-चं.(धनु-के.	प्रधानमंत्री पद की प्राप्ति- 15.08.47- 27.05. 1964 पदच्युत/मृत्यु-27.05.

◆◆◆